Downloaded from www.studiestoday.com

अध्ययन-सामग्री

कक्षा द्वादश- हिंदी (केंद्रिक)

पद्य खंड

इस खंड से तीन प्रकार के प्रश्न पूछे जाएँगे –

प्रश्न :-७ दिए गए काव्यांश में से अर्थ ग्रहण संबंधी चार प्रश्न- २*४ = ८ अंक

प्रश्न ८ :- दिए गए काव्यांश में से सौंदर्य-बोध संबंधी तीन प्रश्न -२*३= ६ अंक

प्रश्न ९ :-विषय-वस्तु पर आधारित तीन प्रश्नों में से दो प्रश्नों के उत्तर -३*२=६ अंक

अधिक अंक-प्राप्ति हेतु ध्यान देने योग्य बातें :-

- कवि, कविता का नाम ,एक दो वाक्यों में सुगठित प्रसंग या पंक्तियों का सार अनिवार्य रूप से याद होना चाहिए .
- वर्तनी एवं वाक्य गठन की अशुद्धियाँ ० (जीरो) % रखने के लिए उत्तरों का लिखित अभ्यास अनिवार्य है .
- तीन अंक के प्रश्न के उत्तर में अनिवार्यत: तीन विचार-बिंदु, शीर्षक बना कर रेखांकित करते हुए, क्रमबद्ध रूप से उत्तर लिखा जाना चाहिए . अन्य प्रश्नों के उत्तरों में भी इसी प्रकार अंकों के अनुसार विचार-बिंदुओं की संख्या होनी चाहिए .
- समय पर पूर्ण प्रश्न-पत्र हल करने के लिए उत्तरों के मुख्य बिंदु क्रम से याद होने चाहिए .
- उत्तरों के विचार-बिन्दुओं एवं वाक्यों का निश्चित क्रम होना चाहिए जो पहले से उत्तर याद किए बिना संभव नहीं होता .
- काव्य-सोंदर्य संबंधी प्रश्नों में अलंकार ,छंद आदि विशेषताएँ कविता में से उदाहरण अंश लिख कर स्पष्ट की जानी चाहिए .
- भाव-साम्य के रूप में अर्थ से मिलती-जुलती अन्य कवियों की पंक्तियाँ लिखना उपयुक्त है .
- कवि एवं कविता की पृष्ठभूमि शिक्षक की सहायता से अनिवार्य रूप से समझ लें | उपयुक्त स्थान पर इसे उत्तर में संकेतित भी करें .

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

1 कविता :– आत्म परिचय

हरिवंश राय बच्चन

'आत्मपरिचय'- 'निशा निमंत्रण' गीत-संग्रह का एक गीत

सार :-

१ स्वयं को जानना दुनिया को जानने से अधिक कठिन भी है और आवश्यक भी .

२ व्यक्ति के लिए समाज से निरपेक्ष एवं उदासीन रहना न तो संभव है न ही उचित है .दुनिया अपने व्यंग्य बाणों ,शासन –प्रशासन से चाहे कितना कष्ट दे ,पर दुनिया से कट कर व्यक्ति अपनी पहचान नहीं बना सकता .परिवेश ही व्यक्ति को बनाता है, ढालता है .

३ इस कविता में कवि ने समाज एवं परिवेश से प्रेम एवं संघर्ष का संबंध निभाते हुए जीवन में सामंजस्य स्थापित करने की बात की है .

४ छायावादोत्तर गीति काव्य में प्रीति-कलह का यह विरोधाभास दिखाई देता है. व्यक्ति और समाज का संबंध इसी प्रकार प्रेम और संघर्ष का है जिसमें कवि आलोचना की परवाह न करते हुए संतुलन स्थापित करते हुए चलता है .

५ 'नादान वहीं है हाय ,जहाँ पर दाना' पंक्ति के माध्यम से कवि सत्य की खोज के लिए ,अहंकार को त्याग कर नई सोच अपनाने पर जोर दे रहा है .

काव्य-खंड पर आधारित दो प्रकार के प्रश्न पूछे जाएँगे – अर्थग्रहण-संबंधी एवं सौंदर्य-बोध-संबंधी

अर्थग्रहण-संबंधी प्रश्न

1-"मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,

फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,

कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर,

मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ."

प्रश्न १:-कवि अपने हृदय में क्या - क्या लिए फिरता है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर:- कवि अपने सांसारिक अनुभवों के सुख - दुख हृदय में लिए फिरता है।

प्रश्न २:- कवि का जग से कैसा रिश्ता है ?

उत्तर:- कवि <u>का **जगजीवन से खट्टामीठा**</u> रिश्ता है।

प्रश्न३:- परिवेश का व्यक्ति से क्या संबंध है? मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ."के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर:- संसार में रह कर **<u>संसार से निरपेक्षता संभव नहीं</u>**है क्योंकि **<u>परिवेश में रहकर ही व्यक्ति की पहचान</u>** बनती है।उसकी अस्मिता सुरक्षित रहती है।

प्रश्न४:- विरोधों के बीच कवि का जीवन किस प्रकार व्यतीत होता है?

उत्तर:-दुनिया के साथ संघर्षपूर्ण संबंध के चलते कवि का **<u>जीवन-विरोधों के बीच सामंजस्य</u>** करते हुए व्यतीत होता है।

<u>सौंदर्य-बोध संबंधी प्रश्न</u>

" मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,

मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,

जग पूछ रहा उनको जो जग की गाते,

मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।"

प्रश्न १:- कविता की इन पंक्तियों से अलंकार छाँट कर लिखिए|

उत्तर :-स्नेह- सुरा– रूपक अलंकार

प्रश्न २:- कविता में प्रयुक्त मुहावरे लिखिए :-

उत्तर :-'जग पूछ रहा', 'जग की गाते', 'मन का गान' आदि मुहावरों का प्रयोग

प्रश्न३:- कविता में प्रयुक्त शैली का नाम लिखें |

उत्तर :- गीति-शैली

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कविता

आत्म-परिचय

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न१:-कवि कौन-कौन-सी स्थितियों में मस्त रहता है और क्यों?

उत्तर:- कवि सांसारिक सुख-दुख की दोनों परिस्थितियों में मग्न रहता है। उसके पास प्रेम की सांत्वना दायिनी अमूल्य निधि है।

प्रश्न२:-कवि भव-सागर से तरने के लिए क्या उपाय अपना रहा है?

उत्तर:- संसार के कष्टों को सहते हुए हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कष्टों को सहना पड़ेगा। इसके लिए मनुष्य को हँस कर कष्ट सहना चाहिए।

प्रश्न३:-'अपने मन का गान' का क्या आशय है?

उत्तर:- संसार उन लोगों को आदर देता है जो उसकी बनाई लीक पर चलते हैं परंतु कवि केवल वही कार्य करता है जो उसके मन, बुद्धि और विवेक को अच्छा लगता है।

प्रश्न४:- 'नादान वहीं हैं हाय जहाँ पर दाना' का क्या आशय है?

उत्तर:- जहाँ कहीं मनुष्य को विद्वत्ता का अहंकार है वास्तव में वही नादानी का सबसे बड़ा लक्षण है।

प्रश्न५:- 'रोदन में राग' कैसे संभव है?

उत्तर:- कवि की रचनाओं में व्यक्त पीड़ा वास्तव में उसके हृदय में मानव मात्र के प्रति व्याप्त प्रेम का ही सूचक है।

प्रश्न६:- "मैं फूट पड़ा तुम कहते छंद बनाना" का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:- कवि की श्रेष्ठ रचनाएँ वास्तव में उसके मन की पीड़ा की ही अभिव्यक्ति है जिनकी सराहना संसार श्रेष्ठ साहित्य कहकर किया करता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कविता

दिन जल्दी जल्दी ढलता है।

प्रस्तुत कविता में कवि बच्चन कहते हैं कि समय बीतते जाने का एहसास हमें लक्ष्य-प्राप्ति के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

मार्ग पर चलने वाला राही यह सोचकर अपनी मंजिल की ओर कदम बढ़ाता है कि कहीं रास्तें में ही रात न हो जाए।

पक्षियों को भी दिन बीतने के साथ यह एहसास होता है कि उनके बच्चे कुछ पाने की आशा में घोंसलों से झांक रहे होंगे। यह सोचकर उनके पंखो में गति आ जाती है कि वे जल्दी से अपने बच्चों से मिल सकें।

कविता में **आशावादी स्वर** है।गंतव्य का स्मरण **पथिक के कदमों में स्फूर्ति** भर देता है।आशा की किरण **जीवन की जड़ता को समाप्त** कर देती है। वैयक्तिक अनुभूति का कवि होने पर भी बच्चन जी की रचनाएँ किसी **सकारात्मक सोच** तक ले जाने का प्रयास हैं।

अर्थग्रहण-संबंधी प्रश्न

"बच्चे प्रत्याशा में होंगे
नीड़ों से झांक रहे होंगे।
यह ध्यान परों में चिड़िया के
भरता कितनी चंचलता है।"

प्रश्न १ :-पथ और रात से क्या तात्पर्य है?

उत्तर :-जीवन रूपी पथ में मृत्यु रूपी रात से सचेत रहने के लिए कहा गया है।

प्रश्न२ :-पथिक के पैरों की गति किस प्रकार बढ़ जाती है?

उत्तर :-मंजिल के पास होने का अहसास, व्यक्ति के मन में स्फूर्ति भर देता है।

प्रश्न३ :-चिड़िया की चंचलता का क्या कारण है?

उत्तर :-चिड़िया के बच्चे उसकी प्रतीक्षा करते होंगे यह विचार चिड़िया के पंखों में गति भर कर उसे चंचल बना देता है।

प्रश्न४ :-प्रयासों में तेजी लाने के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?

उत्तर :- प्रयासों में तेजी लाने के लिए मनुष्य को जीवन में एक निश्चित मधुर लक्ष्य स्थापित करना चाहिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

2 पतंग

आलोक धन्वा

पतंग कविता में कवि आलोक धन्वा बच्चों की बाल सुलभ इच्छाओं और उमंगों तथा प्रकृति के साथ उनके रागात्मक संबंधों का अत्यंत सुन्दर चित्रण किया है।भादों मास गुजर जाने के बाद शरद ऋतु का आगमन होता है।चारों ओर प्रकाश फैल जाता है।सवेरे के सूर्य का प्रकाश लाल चमकीला हो जाता है।शरद ऋतु के आगमन से उत्साह एवं उमंग का माहौल बन जाता है।

शरद ऋतु का यह चमकीला इशारा बच्चों को पतंग उड़ाने के लिए बुलाता है, और पतंग उड़ाने के लिए मंद मंद वायु चलाकर आकाश को इस योग्य बनाता है कि दुनिया की सबसे हलके रंगीन कागज और बांस की सबसे पतली कमानी से बनी पतंगें आकाश की ऊँचाइयों में उड़ सके‘।बच्चों के पाँवों की कोमलता से आकर्षित हो कर मानो धरती उनके पास आती है अन्यथा उनके पाँव धरती पर पड़ते ही नहीं| ऐसा लगता है मानो वे हवा में उड़ते जा रहे हैं।पतंग उड़ाते समय बच्चे रोमांचित होते हैं |एक संगीतमय ताल पर उनके शरीर हवा में लहराते हैं।वे किसी भी खतरे से बिलकुल बेखबर होते हैं।बाल मनोविज्ञान. बाल क्रिया–कलापों एवं बाल सुलभ इच्छाओं का **सुंदर बिंबों के माध्यम से अंकन** किया गया है।

सौंदर्य-बोध संबंधी प्रश्न

‘जन्म से ही लाते हैं अपने साथ कपास’-

‘दिशाओं को मृदंग की बजाते हुए’

‘और भी निडर हो कर सुनहले सूरज के सामने आते हैं’।

‘छतों को और भी नरम बनाते हुए’।

‘जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं

डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर।‘

प्रश्न १:- ‘जन्म से ही लाते हैं अपने साथ कपास’-

इस पंक्ति की भाषा संबंधी विशेषता लिखिए |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :- इस पंक्ति की भाषा संबंधी विशेषता निम्नलिखित हैं :-

नए प्रतीकों का प्रयोग :-कपास-कोमलता

प्रश्न२:- इस पंक्ति में प्रयुक्त लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए|

उत्तर :- लाक्षणिकता -'दिशाओं को मृदंग की बजाते हुए'-संगीतमय वातावरण की सृष्टि

प्रश्न३ :- सुनहला सूरज प्रतीक का अर्थ लिखें |

उत्तर :- सुनहले सूरज के सामने: – निडर ,उत्साह से भरे होना

3 कविता के बहाने

कुँवर नारायण

कुँवर नारायणकी रचनाओं में **संयम, परिष्कार एवं साफ सुथरापन** है।**यथार्थ का कलात्मक संवेदनापूर्ण चित्रण** उनकी रचनाओं की विशेषता है।उनकी रचनाएँ **जीवन को समझने की जिज्ञासा** है यथार्थ– प्राप्ति की घोषणा नहीं।**वैयक्तिक एवं सामाजिक तनाव** व्यंजनापूर्ण ढंग से उनकी रचनाओं में स्थान में पाता है।प्रस्तुत कविता में कवित्व शक्ति का वर्णन है। कविता चिड़िया की उड़ान की तरह कल्पना की उड़ान है लेकिन चिड़िया के उड़ने की अपनी सीमा है जबकि कवि अपनी कल्पना के पंख पसारकर देश और काल की सीमाओं से परे उड़ जाता है।

फूल कविता लिखने की प्रेरणा तो बनता है लेकिन कविता तो बिना मुरझाए हर युग में अपनी खुशबू बिखेरती रहती है।

कविता बच्चों के खेल के समान है और समय और काल की सीमाओं की परवाह किए बिना अपनी कल्पना के पंख पसारकर उड़ने की कला बच्चे भी जानते है।

- मानवी बिंबों के माध्यम से काव्य रचना– प्रक्रिया को प्रस्तुत किया गया है।
- कविता में चिड़िया फूल और बच्चे के प्रतीकों के माध्यम से **बच्चे की रचनात्मक ऊर्जा की तुलना कविता-रचना से** की गई है। चिड़िया की उड़ान **फूल का विकास अपनी सीमा में आबद्ध** है परन्तु कवि की कल्पना शक्ति एवं **बालक के स्वप्न व ऊर्जा असीम** है।
- साहित्य का महत्व, **प्राकृतिक सौन्दर्य की अपेक्षा मानव के भाव-सौन्दर्य की श्रेष्ठता** का प्रतिपादन किया गया है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

"कविता की उड़ान है चिड़िया के बहाने

कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने

बाहर भीतर

इस घर ,उस घर

कविता के पंख लगा उड़ने के माने

चिड़िया क्या जाने?"

प्रश्न १:- इन पंक्तियों की भाषा संबंधी विशेषताएं लिखिए |

उत्तर :- इन पंक्तियों की भाषा संबंधी विशेषताएं निम्नलिखित हैं :-

१ **नए प्रतीक** :-चिड़िया, ।

२ **मुहावरों का सटीक प्रयोग** :–सब घर एक कर देना, कवि की कल्पना की उर्वर शक्ति जिसका प्रयोग करने में कवि जमीन-आसमान एक कर देता है |

प्रश्न २ कविता की उड़ान –का लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :-काव्य की सूक्ष्म अर्थ निरूपण शक्ति ,कवि की कल्पना का विस्तार

प्रश्न :- कविता के पंख किसका प्रतीक हैं ?

उत्तर :-कवि की कल्पना शक्ति का |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

3 कविता के बहाने

कुँवर नारायण

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न१:-चिड़िया की उड़ान एवं कविता की उड़ान में क्या समानता है?

उत्तर :-**उपकरणों की समानता** :- चिड़िया एक घोंसले का सृजन तिनके एकत्र करके करती है| कवि भी उसी प्रकार अनेक भावों एवं विचारों का संग्रह करके काव्य रचना करता है।

क्षमता की समानता :- चिड़िया की उड़ान और कवि की कल्पना की उड़ान दोनों दूर तक जाती हैं|

प्रश्न२ :- कविता की उड़ान चिड़िया की समझ से परे क्यों है?

उत्तर :- कविता की उड़ान चिड़िया की उड़ान से कहीं अधिक सूक्ष्म और महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रश्न३ :-"फूल मुरझा जाते हैं पर कविता नहीं" क्यों स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- कविता **कालजयी** होती है उसका **मूल्य शाश्वत** होता है जबकि फूल बहुत **जल्दी कुम्हला** जाते हैं।

प्रश्न४ :-"बच्चे की उछल-कूद. सब घर एक कर देना' एवं 'कवि का कविता लिखना' दोनों मे क्या समानता एवं विषमता है?

उत्तर :-बच्चा खेल-खेल में घर का **सारा सामान अस्तव्यस्त** कर देता है. **सब कुछ टटोलता** है **एक स्थान पर एकत्र** कर लेता है काव्य रचना-प्रक्रिया में कवि भी **पूरा मानव जीवन खंगाल लेता** है. **एक जगह पिरोता** है पर फिर भी दोनों के प्रयासों में बाल-क्रियाओं का आनंद कवि नहीं समझ सकता।

कविता – बात सीधी थी पर

प्रस्तुत कविता में भाव के अनुरूप भाषा के महत्त्व पर बल दिया गया है।

कवि कहते हैं कि एक बार वह सरल सीधे कथ्य की अभिव्यक्ति में भी भाषा के चक्कर में ऐसा फँस गया कि उसे कथ्य ही बदला की कील से करने जबरदस्ती जोर रप्रका जिस कि है कहता कवि लगा। लगने सा बदला-के कथ्य प्रकार उसी है पड़ता ठोंकना तरह की कील चूड़ीविहीन को कील चूड़ीदार तब और है जाती मर चूड़ी है। जाता किया अभिव्यक्ति को भाव में भाषा प्रभावहीन में अभाव के भाषा अनुकूल

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अंत में भाव ने एक शरारती बच्चे के समान कवि से पूछा कि तूने क्या अभी तक भाषा का स्वाभाविक प्रयोग नहीं सीखा।

- इस कविता में भाषा की संप्रेषण-शक्ति का महत्त्व दर्शाया गया है।
- कृत्रिमता एवं भाषा की अनावश्यक पच्चीकारी से भाषा की पकड़ कमज़ोर हो जाती है।

शब्द अपनी अर्थवत्ता खो बैठता है।

- " उनकी कविता में व्यर्थ का उलझाव, अखबारी सतहीपन और वैचारिक धुंध के बजाय संयम ,परिष्कार और साफ़-सुथरापन है "

" आखिरकार वही हुआ जिसका मुझे डर था

ज़ोर ज़बरदस्ती से

बात की चूड़ी मर गई

और वह भाषा में बेकार घूमने लगी !

हार कर मैंने उसे कील की तरह ठोंक दिया !

ऊपर से ठीकठाक

पर अंदर से

न तो उसमें कसाव था

न ताकत !

बात ने ,जो एक शरारती बच्चे की तरह

मुझसे खेल रही थी,

मुझे पसीना पोंछते देखकर पूछा –

क्या तुमने भाषा को

सहूलियत से बरतना कभी नहीं सीखा ?

प्रश्न१:- इनपंक्तियों की भाषा संबंधी विशेषताएं लिखिए |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :- इनपंक्तियों की भाषा संबंधी विशेषताएं निम्नलिखितहैं :-

१ बिंब /मुहावरों का प्रयोग

२ नए उपमान

प्रश्न २ काव्यांश में आए मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए|

उत्तर :-

- **बिंब /मुहावरों का अर्थ :-** बात की चूड़ी मर जाना –बात में कसावट न होना

बात का शरारती बच्चे की तरह खेलना –बात का पकड़

में न आना

पेंच को कील की तरह ठोंक देना –बात का प्रभावहीन

हो जाना

प्रश्न ३ :- काव्यांश में आएउपमानों को स्पष्ट कीजिए|

उत्तर:-

- नए उपमान – अमूर्त उपमेय भाषा के लिए मूर्त उपमान कील का प्रयोग।
- बात के लिए शरारती बच्चे का उपमान

<u>कविता–</u>

<u>बात सीधी थी पर</u>

<u>विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न १ :-भाषा के चक्कर में बात कैसे फंस जाती है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :-आडंबरपूर्ण भाषा का प्रयोग करने से बात का अर्थ समझना कठिन हो जाता है।

प्रश्न२ :- भाषा को अर्थ की परिणति तक पहुँचाने के लिए कवि क्या क्या प्रयास करते हैं?

उत्तर :- भाषा को अर्थ की परिणति तक पहुँचाने के लिए कवि उसे नाना प्रकार के अलंकरणों से सजाता है कई प्रकार के भाषा और अलंकार संबंधी प्रयोग करता है।

प्रश्न३:- भाषा मे पेंच कसना क्या है?

उत्तर :-भाषा को चामत्कारिक बनाने के लिए विभिन्न प्रयोग करना भाषा मे पेंच कसना है

परंतु इससे भाषा का पेंच ज्यादा कस जाता है अर्थात कथ्य एवं शब्दों में कोई तालमेल नहीं बैठता, बात समझ में ही नहीं आती।

प्रश्न४:- कवि किस चमत्कार के बल पर वाहवाही की उम्मीद करता है?

उत्तर :-कवि शब्दों के चामत्कारिक प्रयोग के बल पर वाहवाही की उम्मीद करता है।

प्रश्न५:-बात एवं शरारती बच्चे का बिंब स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-जिस प्रकार एक शरारती बच्चा किसी की पकड़ में नहीं आता उसी प्रकार एक उलझा दी गई बात तमाम कोशिशों के बावजूद समझने के योग्य नहीं रह जाती चाहे उसके लिए कितने प्रयास किए जाएं,वह एक शरारती बच्चे की तरह हाथों से फिसल जाती है।

४: <u>कैमरे में बंद अपाहिज</u>

<u>रघुवीर सहाय</u>

<u>अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न</u>

हम दूरदर्शन पर बोलेंगे

हम समर्थ शक्तिवान

हम एक दुर्बल को लाएँगे

एक बंद कमरे में

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उससे पूछेंगे तो आप क्या अपाहिज हैं?

तो आप क्यों अपाहिज हैं ?

प्रश्न १:- 'हम दूरदर्शन पर बोलेंगे हम समर्थ शक्तिवान'-का निहित अर्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- इन पंक्तियों में अहं की ध्वनित अभिव्यक्ति है , पत्रकारिता का बढ़ता वर्चस्व दर्शाया गया है ।

प्रश्न२:- हम एक दुर्बल को लाएँगे– पंक्ति का व्यंग्यार्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- पत्रकारिता के क्षेत्र में करुणा का खोखला प्रदर्शन एक परिपाटी बन गई है|

प्रश्न३:- आप क्या अपाहिज हैं?

तो आप क्यों अपाहिज हैं ?पंक्ति द्वारा कवि किस विशिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति करने में सफल हुआ है?

उत्तर :- पत्रकारिता में व्यावसायिकता के चलते संवेदनहीनता बढ़ती जा रही है | यहाँ अपेक्षित उत्तर प्राप्त करने का अधैर्य व्यक्त हुआ है ।

<u>सौंदर्य-बोध-ग्रहण संबंधी अन्य प्रश्न</u>

प्रश्न १:- इन पंक्तियों का लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट कीजिए |

"फिर हम परदे पर दिखलाएँगे

फूली हुई ऑंख की एक बड़ी तस्वीर

बहुत बड़ी तस्वीर

और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी"

उत्तर:- - लाक्षणिक अर्थ :- दृश्य माध्यम का प्रयोग, कलात्मक, काव्यात्मक, सांकेतिक प्रस्तुति का मात्र दिखावा।

"कैमरा बस करो

नहीं हुआ

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

रहने दो"

लाक्षणिक अर्थ :- व्यावसायिक उद्देश्य पूरा न होने की खीझ

"परदे पर वक्त की कीमत है।"–

लाक्षणिक अर्थ :-- सूत्र वाक्य ,क्रूर व्यावसायिक उद्देश्य का उद्घाटन

प्रश्न२ :- रघुवीर सहाय की काव्य कला की विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर :- रघुवीर सहाय की काव्य कला की विशेषताएँनिम्नलिखित हैं -

- कहानीपन और नाटकीयता
- बोलचाल की भाषा के शब्द:– बनाने के वास्ते, संग रुलाने हैं।
- सांकेतिकता– परदे पर वक्त की कीमत है।
- बिंब :–फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर

<u>कैमरे में बंद अपाहिज</u>

<u>विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोतर</u>

प्रश्न१:- दूरदर्शन पर एक अपाहिज का साक्षात्कार किस उद्देश्य से दिखाया जाता है?

उत्तर :-दूरदर्शन पर एक अपाहिज का साक्षात्कार, **<u>व्यावसायिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए</u>** दिखाया जाता है।

प्रश्न२:- अंधे को अंधा कहना किस मानसिकता का परिचायक है?

उत्तर :-अंधे को अंधा कहना, **<u>क्रूर और संवेदनाशून्य मानसिकता का परिचायक</u>** है।

प्रश्न३ :-कविता में यह मनोवृति किस प्रकार उद्घाटित हुई है?

उत्तर :- दूरदर्शन पर एक अपाहिज व्यक्ति को **<u>प्रदर्शन की वस्तु</u>** मान कर उसके **<u>मन की पीड़ा को कुरेदा जाता है</u>**, साक्षात्कारकत्र्ता को उसके **<u>निजी सुखदुख से कुछ लेनादेना नहीं</u>** होता है।

प्रश्न४ :-'हम समर्थ शक्तिवान एवं हम एक दुर्बल को लाएंगे' में निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-साक्षात्कारकर्ता **<u>स्वयं को पूर्ण मान कर</u>**, एक अपाहिज व्यक्ति को **<u>दुर्बल समझने का अहंकार</u>** पाले हुए है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न५:- अपाहिज की शब्दहीन पीड़ा को मीडियाकर्मी किस प्रकार अभिव्यक्त कराना चाहता है?

उत्तर :-मीडियाकर्मी अपाहिज की **लाल सूजी हुई ऑंखों को**, **पीड़ा की सांकेतिक अभिव्यक्ति** के रूप में प्रस्तुत करना चाहता है।

प्रश्न६:-क्यामीडियाकर्मी सफल होता है, यदि नहीं तो क्यों?

उत्तर :-मीडियाकर्मी सफल नहीं होता क्यों कि प्रसारण समय समाप्त हो जाता है और प्रसारण समय के बाद यदि अपाहिज व्यक्ति रो भी देता तो उससे मीडियाकर्मी का व्यावसायिक उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता था उसलिए अब उसे अपाहिज व्यक्ति के आंसुओं में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

प्रश्न७:- नाटकीय कविता की अंतिम परिणति किस रूप में होती है?

उत्तर :-बार बार प्रयास करने पर भी मीडियाकर्मी, अपाहिज व्यक्ति को रोता हुआ नहीं दिखा पाता।वह खीझ जाता है और **खिसियानी मुस्कुराहट के साथ कार्यक्रम समाप्त** कर देता है |**'सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम'शब्दों में व्यंग्य** है क्योंकि मीडिया के **छद्म व्यावसायिक उद्देश्य की पूर्ति नहीं** हो पाती |

प्रश्न८ :-'परदे पर वक्त की कीमत है' में निहित संकेतार्थ को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-प्रसारण समय में **रोचक सामग्री परोस पाना** ही मीडिया कर्मियों का **एकमात्र उद्देश्य** होता है।अन्यथा उनके **सामाजिक सरोकार मात्र एक दिखावा** हैं।

5 सहर्ष स्वीकारा है

गजानन माधव मुक्तिबोध

सार

- कविता में जीवन के सुख– दुख, संघर्ष– अवसाद, उठा– पटक को समान रूप से स्वीकार करने की बात कही गई है।
- स्नेह की प्रगाढ़ता अपनी चरम सीमा पर पहुँच कर वियोग की कल्पना मात्र से त्रस्त हो उठती है।
- प्रेमालंबन अर्थात प्रियजन पर यह भावपूर्ण निर्भरता, कवि के मन में विस्मृति की चाह उत्पन्न करती है।वह अपने प्रिय को पूर्णतया भूल जाना चाहता है |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- वस्तुतः विस्मृति की चाह भी स्मृति का ही रूप है। यह विस्मृति भी स्मृतियों के धुंधलके से अछूती नहीं है।प्रिय की याद किसी न किसी रूप में बनी ही रहती है|
- परंतु कवि दोनों ही परिस्थितियों को उस परम् सत्ता की परछाईं मानता है।इस परिस्थिति को खुशी –खुशी स्वीकार करता है |दुःख-सुख ,संघर्ष –अवसाद, उठा –पटक, मिलन-बिछोह को समान भाव से स्वीकार करता है|प्रिय के सामने न होने पर भी उसके आस-पास होने का अहसास बना रहता है|
- भावना की स्मृति विचार बनकर विश्व की गुत्थियां सुलझाने में मदद करती है| स्नेह में थोड़ी निस्संगता भी जरूरी है |अति किसी चीज की अच्छी नहीं |'वह' यहाँ कोई भी हो सकता है दिवंगत माँ प्रिय या अन्य |कबीर के राम की तरह ,वर्ड्सवर्थ की मातृमना प्रकृति की तरह यह प्रेम सर्वव्यापी होना चाहता है |

"मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!"

- छायावाद के प्रवर्तक प्रसाद की लेखनी से यह स्वर इस प्रकार ध्वनित हुआ है –

"दुख की पिछली रजनी बीच विकसता सुख का नवल प्रभात।
एक परदा यह झीना नील छिपाए है जिसमें सुख गात।"

यह कविता 'नई कविता' में व्यक्त रागात्मकता को आध्यात्मिकता के स्तर पर प्रस्तुत करती है।

<u>अर्थग्रहण-संबंधी प्रश्न</u>

"ज़िंदगी में जो कुछ भी है
सहर्ष स्वीकारा है ;
इसलिए कि जो कुछ भी मेरा है
वह तुम्हें प्यारा है|
गरबीली गरीबी यह, ये गंभीर अनुभव सबयह वैभव विचार सब
दृढ़ता यह,भीतर की सरिता यह अभिनव सब
मौलिक है, मौलिक है
इसलिए कि पल-पल में
जो कुछ भी जाग्रत है अपलक है-
संवेदन तुम्हारा है!"

प्रश्न १:- कवि और कविता का नाम लिखिए|

उत्तर:- कवि- गजानन माधव मुक्तिबोध

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कविता– सहर्ष स्वीकारा है

प्रश्न२:- गरबीली गरीबी,भीतर की सरिता आदि प्रयोगों का अर्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :-गरबीली गरीबी– निर्धनता का स्वाभिमानी रूप ।कवि के विचारों की मौलिकता ,अनुभवों की गहराई ,दृढ़ता , हृदय का प्रेम उसके गर्व करने का कारण है |

प्रश्न३ :- कवि अपने प्रिय को किस बात का श्रेय दे रहा है ?

उत्तर:- निजी जीवन के प्रेम का संबंल कवि को विश्व व्यापी प्रेम से जुड़ने की प्रेरणा देता है |अत: कवि इसका श्रेय अपने प्रिय को देता है |

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

<u>सौंदर्य-बोध-ग्रहण संबंधी प्रश्न</u>

"जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है

जितना भी उंडेलता हूँ ,भर –भर फिर आता है

दिल में क्या झरना है ?

मीठे पानी का सोता है

भीतर वह ,ऊपर तुम

मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात- भर

मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है |"

प्रश्न१:- कविता की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर:- १-सटीक प्रतीकों,

२- नये उपमानों का प्रयोग

प्रश्न२ :- "दिल में क्या झरना है?

मीठे पानी का सोता है?"- -के लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- "दिल में क्या झरना है?-हृदय के अथाह प्रेम का परिचायक

मीठे पानी का सोता है?" -अविरल, कभी समाप्त होने वाला प्रेम

प्रश्न३:- कविता में प्रयुक्त बिंब का उदाहरण लिखिए |

दृश्य बिंब– "मुस्काता चाँद ज्यों धरती पर रात भर। मुझ पर तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा।"

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

5 सहर्ष स्वीकारा है

गजानन माधव मुक्तिबोध

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न१:-कवि ने किसे सहर्ष स्वीकारा है?

उत्तर:-

- कविता में जीवन के सुख– दुख, संघर्ष– अवसाद, उठा– पटक को समान रूप से स्वीकार करने की बात कही गई है।
- प्रिय से बिछुड़ कर भी उसकी स्मृतियों को व्यापक स्तर पर ले जाकर विश्व चेतना में मिला देने की बात कही गई है |

प्रश्न२:- कवि को अपने अनुभव विशिष्ट एवं मौलिक क्यों लगते हैं?

उत्तर:- कवि को अपनी स्वाभिमानयुक्त गरीबी, जीवन के गम्भीर अनुभव विचारों का वैभव, व्यक्तित्व की दृढ़ता, मन की भावनाओं की नदी, यह सब नए रूप में मौलिक लगते हैं क्यों कि उसके जीवन में जो कुछ भी घटता है वह जाग्रत है, **विश्व उपयोगी** है अत: उसकी उपलब्धि है और वह उसकी **प्रिया की प्रेरणा से ही संभव** हुआ है। उसके जीवन का प्रत्येक अभाव ऊर्जा बनकर **जीवन में नई दिशा** ही देता रहा है |

प्रश्न३:- "दिल का झरना" का सांकेतिक अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-जिस प्रकार झरने में चारों ओर की पहाड़ियों से पानी इकट्ठा हो जाता है उसे एक **कभी खत्म न होने वाले स्रोत** के रूप में प्रयोग किया जा सकता है उसी प्रकार कवि के दिल में स्थित प्रेम उमड़ता है, कभी समाप्त नहीं होता। **जीवन का सिंचन** करता है| **व्यक्तिगत स्वार्थ से दूर** पूरे **समाज के लिए जीवनदायी** हो जाता है |

प्रश्न४:- 'जितना भी उँड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है " का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:-हृदय में स्थित प्रेम की विशेषता यह है कि जितना अधिक व्यक्त किया जाए उतना ही बढ़ता जाता है।

प्रश्न५:- वह रमणीय उजाला क्या है जिसे कवि सहन नहीं कर पाता ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर:-कवि ने प्रियतमा की आभा से,प्रेम के सुखद भावों से सदैव घिरे रहने की स्थिति को उजाले के रूप में चित्रित किया है। इन स्मृतियों से घिरे रहना आनंददायी होते हुए भी कवि के लिए असहनीय हो गया है क्योंकि इस आनंद से वंचित हो जाने का भय भी उसे सदैव सताता रहता है।

6. उषा

शमशेर बहादुर सिंह

सार

उषा कविता में सूर्योदय के समय आकाश मंडल में रंगों के जादू का सुन्दर वर्णन किया गया है। सूर्योदय के पूर्व प्रातःकालीन आकाश नीले शंख की तरह बहुत नीला होता है । भोरकालीन नभ की तुलना काली सिल से की गयी है जिसे अभी-अभी केसर पीसकर धो दिया गया है। कभी कवि को वह राख से लीपे चौके के समान लगता है, जो अभी गीला पड़ा है। नीले गगन में सूर्य की पहली किरण ऐसी दिखाई देती है मानो कोई सुंदरी नीले जल में नहा रही हो और उसका गोरा शरीर जल की लहरों के साथ झिलमिला रहा हों।

प्रात:कालीन, **परिवर्तनशील सौंदर्य का दृश्य बिंब** ,प्राकृतिक परिवर्तनों को **मानवीय क्रियाकलापों के माध्यम से** व्यक्त किया गया है। **यथार्थ जीवन से चुने गए उपमानों** जैसे:- राख से लीपा चौका ,काली सिल,नीला शंख, स्लेट,लाल खड़िया चाक आदि का प्रयोग । प्रसाद की कृति –**बीती विभावरी जाग री से तुलना** की जा सकती है ।

कविता– उषा

अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न

"प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर
से कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जैसे हिल रही हो |

और .....

जादू टूटता है इस उषा का अब

सूर्योदय हो रहा है|"

प्रश्न१ :-उषा कविता में सूर्योदय के किस रूप को चित्रित किया गया है?

उत्तर :-कवि ने प्रातःकालीन, परिवर्तनशील सौंदर्य का दृश्य बिंब मानवीय क्रियाकलापों के माध्यम से व्यक्त किया है।

प्रश्न२ :-भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में क्या समानता है?

उत्तर :-भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में यह समानता है कि दोनों ही गहरे सलेटी रंग के हैं,पवित्र हैं। नमी से युक्त हैं।

प्रश्न३ :- स्लेट पर लाल ....पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए|

उत्तर :- भोर का नभ लालिमा से युक्त स्याही लिए हुए होता है | अत: लाल खड़िया चाक से मली गई स्लेट जैसा प्रतीत होता है |

प्रश्न४:- उषा का जादू किसे कहा गया है ?

उत्तर विविध रूप रंग बदलती सुबह व्यक्ति पर जादुई प्रभाव डालते हुए उसे मंत्र मुग्ध कर देती है |

<u>सौंदर्य-बोध-संबंधी विशेषताएँ</u>

प्रश्न१:- ।कविता में प्रयुक्त उपमानों को स्पष्ट कीजिए।

- भोर का नभ राख से लीपा चौका दोनों ही गहरे सलेटी रंग के हैं।पवित्र हैं।नमी से युक्त हैं।
- काली सिल भोर का नभ और लालकेसर से धुली काली सिल दोनों ही लालिमा से युक्त हैं।
- काली सिलेट जो लाल खड़िया चाक से मल दी गई हो और भोर का नभ दोनों ही लालिमा से युक्त हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- प्रातः काल के स्वच्छ निर्मल आकाश में सूर्य ऐसा प्रतीत होता है मानो नीलजल में कोई स्वर्णिम देह नहा रही हो।

प्रश्न२:- कविता की भाषा एवं अभिव्यक्ति संबंधी विशेषताएं लिखिए।

उत्तर :-१ यथार्थ जीवन से चुने गए उपमान –राख से लीपा चौका।

२ दृश्यबिंब

प्रश्न ३ कविता में आए अलंकारों को छॉटकर लिखिए।

उत्तर :- उपमा अलंकार:- भोर का नभ राख से लीपा चौका

उत्प्रेक्षा अलंकार:-

" बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।

नील जल में या किसी की

गौर झिलमिल देह

जैसे हिल रही हो "

<u>**विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर**</u>

प्रश्न१:- कविता के किन उपमानों को देख कर कहा जा सकता है कि उषा गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है ?

उत्तर :-कविता में नीले नभ को राख से लिपे गीले चौके के समान बताया गया है | दूसरे बिंब में उसकी तुलना काली सिल से की गई है| तीसरे में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है|लीपा हुआ आँगन ,काली सिल या स्लेट गाँव के परिवेश से ही लिए गए हैं |प्रात: कालीन सौंदर्य क्रमश: विकसित होता है | सर्वप्रथम राख से लीपा चौका जो <u>**गीली राख के कारण गहरे स्लेटी रंग का अहसास**</u> देता है और पौ फटने के समय <u>**आकाश के गहरे स्लेटी रंग से मेल**</u> खाता है |उसके पश्चात तनिक <u>**लालिमा के मिश्रण से काली सिल का जरा से लाल केसर से धुलना**</u> सटीक उपमान है तथा <u>**सूर्य की लालिमा के रात की काली स्याही में घुल जाने का सुंदर बिंब**</u> प्रस्तुत करता है | धीरे –धीरे लालिमा भी समाप्त हो जाती है और <u>**सुबह का नीला आकाश नील जल का आभास**</u> देता है व <u>**सूर्य की स्वर्णिम आभा गौरवर्णी देह के नील जल में नहा कर निकलने की उपमा**</u> को सार्थक सिद्ध करती है | प्रश्न२ :-

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

भोर का नभ
राख से लीपा चौका
(अभी गीला पड़ा है)

नयी कविता में कोष्ठक ,विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है |उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है ? समझाइए |

उत्तर :- नई कविता प्रयोग धर्मी है |इसमें भाषा- शिल्प के स्तर पर हर नए प्रयोग से अर्थ की अभिव्यक्ति की जाती है|प्राय: कोष्ठक अतिरिक्त ज्ञान की सूचना देता है|यहाँ अभी गीला पड़ा है के माध्यम से कवि गीलेपन की ताजगी को स्पष्ट कर रहा है |ताजा गीलापन स्लेटी रंग को अधिक गहरा बना देता है जबकि सूखने के बाद राख हल्के स्लेटी रंग की हो जाती है|

7. बादल राग

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

निराला की यह कविता अनामिका में छह खंडों में प्रकाशित है।यहां उसका छठा खंड लिया गया है|आम आदमी के दु:ख से त्रस्त कवि परिवर्तन के लिए क्रांति रुपी बादल का आह्वान करता है |इस कविता में **बादल क्रांति या विप्लव का प्रतीक** है। कवि विप्लव के बादल को संबोधित करते हुए कहता है **कि जन की मन- भरी से आकांक्षाओं**तेरी नाव समीर रूपी सागर पर तैर रही है। अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया तैरती दिखाई देती है। **संसार के लोगों के हृदय दग्ध हैं(दु:खी)**। उन पर निर्दयी विप्लव अर्थात् क्रांति की माया फैली हुई है। **बादलों के गर्जन से पृथ्वी के गर्भ में सोए अंकुर बाहर निकल आते हैं** अर्थात शोषित वर्ग सावधान हो जाता है और **आशा भरी दृष्टि से क्रांति की ओर देखने** लगता है। उनकी आशा क्रांति पर ही टिकी है। बादलों की गर्जना और मूसलाधार वर्षा में बड़े बड़े-पर्वत वृक्ष घबरा जाते हैं।उनको उखड़कर गिर जाने का भय होता है |क्राति की हुंकार से **पूँजीपति घबरा उठते हैं**, वे दिल थाम कर रह जाते हैं। **क्रांति को तो छोटे- हैं। बुलाते लोग छोटे** जिस प्रकार छोटे हिलाकर हाथ पौधे छोटे-**बादलों के आगमन का स्वागत करते हैं** वैसे ही शोषित वर्ग क्रांति के आगमन का स्वागत करता है।

छायावादी कवि निराला **साम्यवादी प्रभाव** से भी जुड़े हैं।**मुक्त छंद** हिन्दी को उन्हीं की देन है।**शोषित वर्ग की समस्याओं को समाप्त करने** के लिए **क्रांति रूपी बादल का आह्वान** किया गया है।

अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न

कविता–

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बादल राग

“तिरती है समीर-सागर पर

अस्थिर सुख पर दुःख की छाया –

जग के दग्ध हृदय पर

निर्दय विप्लव की प्लावित माया-

यह तेरी रण-तरी

भरी आकांक्षाओं से ,

घन भेरी –गर्जन से सजग सुप्त अंकुर

उर में पृथ्वी के, आशाओं से नवजीवन की ,ऊंचा कर सिर,

ताक रहे हैं ,ऐ विप्लव के बादल!

फिर –फिर

बार –बार गर्जन

वर्षण है मूसलधार ,

हृदय थाम लेता संसार ,

सुन- सुन घोर वज्र हुंकार |

अशनि पात से शायित शत-शत वीर ,

क्षत –विक्षत हत अचल शरीर,

गगन- स्पर्शी स्पर्द्धा धीर |”

प्रश्न१:- कविता में बादल किस का प्रतीक है?और क्यों?

उत्तर :-बादलराग क्रांति का प्रतीक है। इन दोनों के आगमन के उपरांत विश्व हरा- भरा. समृद्ध और स्वस्थ हो जाता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न २ :-सुख को अस्थिर क्यों कहा गया है?

उत्तर :-सुख सदैव बना नहीं रहता अतः उसे अस्थिर कहा जाता है।

प्रश्न३ :-विप्लवी बादल की युद्ध रूपी नौका की क्या- क्या विशेषताएं हैं?

उत्तर :-बादलों के अंदर आम आदमी की इच्छाएँ भरी हुई हैं।जिस तरह से युद्र्ध नौका में युद्ध की सामग्री भरी होती है।युद्ध की तरह बादल के आगमन पर रणभेरी बजती है। सामान्यजन की आशाओं के अंकुर एक साथ फूट पड़ते हैं।

प्रश्न४ :-बादल के बरसने का गरीब एवं धनी वर्ग से क्या संबंध जोड़ा गया है?

उत्तर:-बादल के बरसने से गरीब वर्ग आशा से भर जाता है एवं धनी वर्ग अपने विनाश की आशंका से भयभीत हो उठता है ।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न

“हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार-

शस्य अपार ,

हिल हिल

खिल खिल

हाथ हिलाते

तुझे बुलाते।

विप्लव रव से छोटे ही हैं शोभा पाते|”

प्रश्न १:- निम्न लिखित प्रतीकों को स्पष्ट कीजिए– छोटे पौधे, सुप्त अंकुर

उत्तर :- छोटे पौधे- शोषित वर्ग , सुप्त अंकुर- आशाएं ,

प्रश्न२:- ‘हँसते हैं छोटे पौधे’-का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :-प्रसन्न चित्त निर्धन वर्ग जो क्रांति की संभावना मात्र से खिल उठता है।

प्रश्न३:-‘छोटे ही हैं शोभा पाते’ में निहित लाक्षणिकता क्या है ?

उत्तर:-बचपन में मनुष्य निश्चिंत होता है। निर्धन मनुष्य उस बच्चे के समान है जो क्रांति के समय भी निर्भय होता है और अंतत: लाभान्वित होता है।

कविता–

बादल राग

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न१:- पूंजीपतियों की अट्टालिकाओं को आतंक भवन क्यों कहा गया है ?

उत्तर :-बादलों की गर्जना और मूसलाधार वर्षा में बड़े बड़े-पर्वत वृक्ष घबरा जाते हैं।उनको **उखड़कर गिर जाने का भय** होता है |उसी प्रकार क्राति की हुंकार से **पूँजीपति घबरा उठते हैं**, वे दिल थाम कर रह जाते

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

हैं।उन्हें अपनी **<u>संपत्ति एवं सत्ता के छिन जाने का भय</u>** होता है | उनकी **<u>अट्टालिकाएँ मजबूती का भ्रम</u>** उत्पन्न करती हैं पर वास्तव में वे अपने **<u>भवनों में आतंकित</u>** होकर रहते हैं|

प्रश्न२:- कवि ने किसान का जो शब्द-चित्र दिया है उसे अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर :- किसान के **<u>जीवन का रस शोषकों ने चूस लिया</u>** है ,आशा और **<u>उत्साह की संजीवनी समाप्त</u>** हो चुकी है |शरीर से भी वह **<u>दुर्बल एवं खोखला</u>** हो चुका है | क्रांति का बिगुल उसके **<u>हृदय में आशा का संचार</u>** करता है |वह **<u>खिलखिला कर बादल रूपी क्रांति का स्वागत</u>** करता है |

प्रश्न३:- अशनि पात क्या है ?

उत्तर:- बादल की गर्जना के साथ बिजली गिरने से **<u>बड़े –बड़े वृक्ष जल कर राख</u>** हो जाते हैं | उसी प्रकार क्रांति की आंधी आने से **<u>शोषक, धनी वर्ग की सत्ता समाप्त</u>** हो जाती है और वे खत्म हो जाते हैं |

प्रश्न४:- पृथ्वी में सोये अंकुर किस आशा से ताक रहे हैं ?

उत्तर :- बादल के बरसने से **<u>बीज अंकुरित हो लहलहाने लगते हैं</u>** | अत: बादल की गर्जन उनमें **<u>आशाएँ</u>** उत्पन्न करती है | वे सिर ऊँचा कर **<u>बादल के आने की राह निहारते</u>** हैं | ठीक उसी प्रकार निर्धन व्यक्ति **<u>शोषक के अत्याचार से मुक्ति पाने</u>** और अपने जीवन **<u>की खुशहाली की आशा</u>** में **<u>क्रांति रूपी बादल की प्रतीक्षा</u>** करते हैं |

प्रश्न५:- रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष –किसके लिए कहा गया है और क्यों ?

उत्तर :- क्रांति होने पर पूंजीपति वर्ग **<u>का धन छिन जाता है,कोष रिक्त हो जाता</u>** है | उसके **<u>धन की आमद समाप्त</u>** हो जाती है | उसका **<u>संतोष भी अब 'बीते दिनों की बात'</u>** हो जाता है |

प्रश्न६:- अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया का भाव स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- मानव-जीवन में सुख सदा बना नहीं रहता है , उस पर दु:ख की छाया सदा मंडराती रहती है |

प्रश्न७:- बादल किस का प्रतीक है ?

उत्तर :- बादल इस कविता में **<u>क्रांति का प्रतीक</u>** है | जिस प्रकार बादल **<u>प्रकृति ,किसान और आम आदमी के जीवन में आनंद का उपहार</u>** ले कर आता है उसी प्रकार क्रांति निर्धन शोषित वर्ग के जीवन **<u>में समानता का अधिकार व संपन्नता</u>** ले कर आता है

प्रश्न८:- बादल को जीवन का पारावार क्यों कहा गया है ?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :- क्रांति रूपी बादल का आगमन **जीवनदायी, सुखद** होता है -पारावार अर्थात सागर | वह **जीवन में खुशियों का खजाना** लेकर आता है | **निर्धन वर्ग को समानता का अधिकार** देता है |**सुख समृद्धि का कारक** बनकर **अत्याचार की अग्नि से मुक्त** करता है |

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

8 कवितावली

तुलसीदास

सार

श्रीरामजी को समर्पित ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस उत्तर भारत मे बड़े भक्तिभाव से पढ़ा जाता है। **लक्ष्मण -विलाप का राम और मूर्च्छा**

रावण पुत्र मेघनाद द्वारा शक्ति बाण से मूर्छित हुए लक्ष्मण को देखकर राम व्याकुल हो जाते हैं।सुषेण वैद्य ने संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान को हिमालय पर्वत पर भेजा।आधी रात व्यतीत होने पर जब हनुमान नहीं आए,तब राम ने अपने छोटेभाई लक्ष्मण को उठाकर हृदय से लगा लिया और साधारण मनुष्य की भाँति विलाप करने लगे।राम बोले सदा स्वभाव थे।तुम्हारा सकते देख नहीं दुखी कभी मुझे तुम! भाई हे...... सर्दी में वन साथ मेरे और दिया छोड़ भी को पिता माता लिए मेरे था।तुमने कोमल ही से,गर्मी और विभिन्न प्रकार की विपरीत परिस्थितियों को भी सहा|जैसे पंख बिना पक्षी,मणि बिना सर्प और सूँड बिना श्रेष्ठ हाथी अत्यंत दीन हो जाते हैं,हे भाई!यदि मैं जीवित रहता हूँ तो मेरी दशा भी वैसी ही हो जाएगी।

मैं अपनी पत्नी के लिए अपने प्रिय भाई को खोकर कौन सा मुँह लेकर अयोध्या जाऊँगा।इस बदनामी को भले ही सह लेता कि राम कायर है और अपनी पत्नी को खो बैठा। स्त्री की हानि विशेष क्षति नहीं है,परन्तु भाई को खोना अपूरणीय क्षति है।

'रामचरितमानस' के 'लंका कांड' से गृही **लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने का प्रसंग** कवि की मार्मिक स्थलों की पहचान का एक श्रेष्ठ नमूना है। भाई के शोक में विगलित **राम का विलाप** धीरे जाता बदल में प्रलाप धीरे-है, जिसमें लक्ष्मण के प्रति **राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण** सहसा अनावृत हो जाते हैं।यह प्रसंग **ईश्वर राम में मानव सुलभ गुणों का समन्वय** कर देता है | हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना **करुण रस में वीर रस का उदय** हो जाने के समान है|

विनय पत्रिका एक अन्य महत्त्वपूर्ण तुलसीदासकृत काव्य है।

कवित्त और सवैया

सार

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

इस शीर्षक के अंतर्गत दो कवित्त और एक सवैया संकलित हैं। 'कवितावली' से अवतरित इन कवित्तों में कवि तुलसी का **विविध विषमताओं से ग्रस्त कलिकालतुलसी का युगीन यथार्थ** है, जिसमें वे कृपालु प्रभु राम **व रामराज्य का स्वप्न** रचते हैं। युग और उसमें अपने जीवन का न सिर्फ उन्हें गहरा बोध है, बल्कि उसकी अभिव्यक्ति में भी वे अपने समकालीन कवियों से आगे हैं। यहाँ पाठ में प्रस्तुत 'कवितावली' के छंद इसके प्रमाण छंद पहले हैं। स्वरूप-"किसवी किसान ....“ में उन्होंने दिखलाया है कि संसार के अच्छे बुरे- समस्त**लीला आधार का प्रपंचों-'पेट की आग'**का गहन यथार्थ है; जिसका समाधान वे राम की भक्ति में देखते हैं। दरिद्रजन की व्यथा दूर करने के लिए राम रूपी घनश्याम का आह्वान किया गया है। **पेट की आग बुझाने के लिए राम रूपी वर्षा का जल अनिवार्य** है।इसके लिए **अनैतिक कार्य करने की आवश्यकता नहीं** है।' इस प्रकार, उनकी राम भक्ति पेट की आग बुझाने वाली यानी **जीवन के यथार्थ संकटों का समाधान करने वाली** है; न कि केवल आध्यात्मिक मुक्ति देने वाली| **गरीबी की पीड़ा रावण के समान दुखदायी** हो गई है।

तीसरे छंद)"धूत कहौ...") में भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे **भक्त का आत्मविश्वास के हृदय चित्रण सजीव**है, जिससे समाज में व्याप्त जात है। होता पैदा साहस का तिरस्कार के दुराग्रहों और पाँत-प्रकार इस**भक्ति की रचनात्मक भूमिका का संकेत** यहाँ है, जो **आज के भेदभाव मूलक युग में अधिक प्रासंगिक** है |

अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न

"उहाँ राम लछिमनहिं निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी॥

अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ॥

सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ॥

मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता॥

सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई॥

जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू॥

सुत बित नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा॥

अस बिचारि जियँ जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना॥

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥

जैहउँ अवध कवन मुहु लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई॥

बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं॥

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहिहि निठुर कठोर उर मोरा॥

निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा॥

सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी॥

उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई॥"

प्रश्न१:-'बोले बचन मनुज अनुसारी'- का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर :- भाई के शोक में विगलित **राम का विलाप** धीरे- है जाता बदल में प्रलाप धीरे-, जिसमें लक्ष्मण के प्रति **राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण** सहसा अनावृत हो जाते हैं। यह प्रसंग **ईश्वर राम में मानव सुलभ गुणों का समन्वय** कर देता है| वे मनुष्य की भांति विचलित हो कर ऐसे वचन कहते हैं जो मानवीय प्रकृति को ही शोभा देते हैं |

प्रश्न२:- राम ने लक्ष्मण के किन गुणों का वर्णन किया है?

उत्तर :-राम ने लक्ष्मण के इन गुणों का वर्णन किया है-

- लक्ष्मण राम से बहुत स्नेह करते हैं |
- उन्होंने भाई के लिए अपने माता –पिता का भी त्याग कर दिया |
- वे वन में वर्षा ,हिम, धूप आदि कष्टों को सहन कर रहे हैं |
- उनका स्वभाव बहुत मृदुल है |वे भाई के दुःख को नहीं देख सकते |

प्रश्न३:- राम के अनुसार कौन सी वस्तुओं की हानि बड़ी हानि नहीं है और क्यों ?

उत्तर :-राम के अनुसार धन ,पुत्र एवं नारी की हानि बड़ी हानि नहीं है क्योंकि ये सब खो जाने पर पुन: प्राप्त किये जा सकते हैं पर एक बार सगे भाई के खो जाने पर उसे पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न४:- पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी की क्या दशा होती है काव्य प्रसंग में इनका उल्लेख क्यों किया गया है ?

उत्तर :- राम विलाप करते हुए अपनी भावी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं कि जैसे पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी पीड़ित हो जाता है ,उनका अस्तित्व नगण्य हो जाता है वैसा ही असहनीय कष्ट राम को लक्ष्मण के न होने से होगा |

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न

प्रश्न१:- काव्यांश की भाषा सौंदर्य संबंधी दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए|

उत्तर:- १रस -करुण रस

२ अलंकार - उत्प्रेक्षा अलंकार–

मनु करुणा मंह बीर रस।

जागा निसिचर देखिअ कैसा।मानहुँ काल देह धरि बैसा।

दृष्टांत अलंकार - जथा पंख बिन खग अति दीना।मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।

अस मन जिवन बंधु बिन तोही।जो जड़ दैव जिआवै मोही।

विरोधाभास अलंकार -बहुबिधि सोचत सोच बिमोचन।

प्रश्न२:- काव्यांश की भाषा का नाम लिखिए |

उत्तर :- अवधी भाषा

प्रश्न३:- काव्यांश में प्रयुक्त छंद कौन –सा है ?

उत्तर:- १६,१६ मात्राओं का सम मात्रिक चौपाई छंद |

सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न

"किसबी, किसान-कुल ,बनिक, भिखारी ,भाट,
चाकर ,चपल नट ,चोर, चार ,चेटकी|
पेटको पढ्त,गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन –गन अहन अखेट्की|
ऊंचे –नीचे करम ,धरम –अधरम करि,
पेट ही को पचत, बचत बेटा –बेटकी |
'तुलसी' बुझाई एक राम घनस्याम ही तें ,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी|"

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न१:- कवितावली किस भाषा में लिखी गई है?

उत्तर :- ब्रज भाषा

प्रश्न२:- कवितावली में प्रयुक्त छंद एवं रस को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- इस पद में 31. 31 वर्णों का चार चरणों वाला समवर्णिक कवित्त छंद है जिसमें 16 एवं 15 वर्णों पर विराम होता है।

प्रश्न३:- कवित्त में प्रयुक्त अलंकारों को छांट कर लिखिए

१. अनुप्रास अंलकार–

किसबी, किसान-कुल ,बनिक, भिखारी ,भाट,

चाकर ,चपल नट ,चोर, चार ,चेटकी|

२. रूपक अलंकार– राम– घनश्याम

३. अतिशयोक्ति अलंकार– आगि बड़वागि तें बड़ि है आग पेट की।

लक्ष्मण- विलाप का राम और मूर्च्छा

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न १:-'तव प्रताप उर राखि प्रभु में किसके प्रताप का उल्लेख किया गया है?'और क्यों ?

उत्तर :-इन पँक्तियों में भरत के प्रताप का उल्लेख किया गया है। हनुमानजी उनके प्रताप का स्मरण करते हुए अयोध्या के ऊपर से उड़ते हुए संजीवनी ले कर लंका की ओर चले जा रहे हैं।

प्रश्न२:- राम विलाप में लक्ष्मण की कौन सी विशेषताएँ उद्घटित हुई हैं ?

उत्तर :-लक्ष्मण का भ्रातृ प्रेम. त्यागमय जीवन इन पँक्तियों के माध्यम से उदघाटित हुआ है।

प्रश्न३:- बोले वचन मनुज अनुसारी से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर :-भगवान राम एक साधारण मनुष्य की तरह विलाप कर रहे हैं किसी अवतारी मनुष्य की तरह नहीं। भ्रातृ प्रेम का चित्रण किया गया है।तुलसीदास की मानवीय भावों पर सशक्त पकड़ है।दैवीय व्यक्तित्व का लीला रूप ईश्वर राम को मानवीय भावों से समन्वित कर देता है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न४:- भाई के प्रति राम के प्रेम की प्रगाढ़ता उनके किन विचारों से व्यक्त हुई है?

उत्तर :- जथा पंख बिन खग अति दीना।

मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।

अस मम जिवन बंधु बिनु तोही।

जो जड़ दैव जिआवै मोही।

प्रश्न५:- 'बहुविधि सोचत सोचविमोचन' का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-दीनजन को शोक से मुक्त करने वाले भगवान राम स्वयं बहुत प्रकार से सोच में पड़कर दुखी हो रहे हैं।

प्रश्न६:- हनुमान का आगमन करुणा में वीर रस का आना किस प्रकार कहा जा सकता है?

उत्तर :-रुदन करते वानर समाज में हनुमान उत्साह का संचार करने वाले वीर रस के रूप में आ गए। करुणा की नदी हनुमान द्वारा संजीवनी ले आने पर मंगलमयी हो उठती है।

<u>**कवित्त और सवैया**</u>

<u>**विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर**</u>

प्रश्न१:- पेट की भूख शांत करने के लिए लोग क्या क्या करते हैं?

उत्तर :-पेट की आग बुझाने के लिए लोग अनैतिक कार्य करते हैं।

प्रश्न२:- तुलसीदास की दृष्टि में सांसारिक दुखों से निवृत्ति का सर्वोत्तम उपाय क्या है?

उत्तर :- पेट की आग बुझाने के लिए राम कृपा रूपी वर्षा का जल अनिवार्य है।इसके लिए अनैतिक कार्य करने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न३:- तुलसी के युग की समस्याओं का चित्रण कीजिए।

उत्तर :- तुलसी के युग में प्राकृतिक और प्रशासनिक वैषम्य के चलते उत्पन्न पीडा. दरिद्रजन के लिए रावण के समान दुखदायी हो गई है।

प्रश्न४:- तुलसीदास की भक्ति का कौन सा स्वरूप प्रस्तुत कवित्तों में अभिव्यक्त हुआ है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :- तुलसीदास की भक्ति का दास्य भाव स्वरूप प्रस्तुत कवित्तों में अभिव्यक्त हुआ है।

9 रूबाइयाँ

फ़िराक गोरखपुरी

मूल नाम– रघुपति सहाय फ़िराक

उर्दू शायरी की रिवायत के विपरीत फिराक गोरखपुरी के साहित्य में लोक जीवन एवं प्रकृति की झलक मिलती है। सामाजिक संवेदना वैयक्तिक अनुभूति बन कर उनकी रचनाओं में व्यक्त हुई है।जीवन का कठोर यथार्थ उनकी रचनाओं में स्थान पाता है।उन्होंने लोक भाषा के प्रतीकों का प्रयोग किया है। लाक्षणिक प्रयोग उनकी भाषा की विशेषता है।फ़िराक की रुबाईयों में घरेलू हिंदी का रूप दिखता है |

रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छंद या लेखन शैली है जिसमें चार पंक्तियाँ होती हैं |इसकी पहली ,दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक (काफ़िया)मिलाया जाता है तथा तीसरी पंक्ति स्वच्छंद होती है |

"वो रूपवती मुखड़े पे इक नर्म दमक"

"बच्चे के घरोंदे में जलाती है दिए।"

"रक्षाबंधन की सुबह रस की पुतली"

"बिजली की तरह चमक रहे हैं लच्छे"

"भाई के है बाँधती चमकती राखी।"- जैसे प्रयोग उनकी भाषा की सशक्तता के नमूने के तौर पर देखे जा सकते हैं |

सार

रूबाइयाँ

रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से होता है ।

गज़ल

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ में फिराक की एक गज़ल भी शामिल है। रूबाइयों की तरह ही फिराक की गजलों में भी हिंदी समाज और उर्दू शायरी की परंपरा भरपूर है। इसका अद्भुत नमूना है यह गज़ल। यह गज़ल कुछ इस तरह बोलती है कि जिसमें दर्द भी है, एक शायर की ठसक भी है और साथ ही है काव्य-शिल्प की वह ऊँचाई जो गज़ल की विशेषता मानी जाती है।

<u>अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न</u>

"आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी

हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी

रह-रह के हवा में जो लोका देती है

गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी"

प्रश्न१:- 'चाँद के टुकड़े'का प्रयोग किसके लिए हुआ है? और क्यों ?

उत्तर :-बच्चे को चाँद का टुकड़ा कहा गया है जो माँ के लिए बहुत प्यारा होता है।

प्रश्न२:- गोद-भरी प्रयोग की विशेषता को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- गोद-भरी शब्द-प्रयोग **<u>माँ के वात्सल्यपूर्ण, आनंदित उत्साह</u>** को प्रकट करता है |यह अत्यंत सुंदर दृश्य बिंब है | सूनी गोद के विपरीत **<u>गोद का भरना माँ के लिए असीम सौभाग्य का सूचक</u>** है |इसी **<u>सौभाग्य का सूक्ष्म अहसास माँ को तृप्ति</u>** दे रहा है|

प्रश्न३:- लोका देना किसे कहते हैं ?

उत्तर :- जब माँ बच्चे को बाहों में लेकर हवा में उछालती है इसे लोका देना कहते हैं|छोटे बच्चों को यह खेल बहुत अच्छा लगता है

प्रश्न४:- बच्चा माँ की गोद में कैसी प्रतिक्रिया करता है?

उत्तर :- हवा में उछालने (लोका देने) से बच्चा माँ का वात्सल्य पाकर प्रसन्न होता है और खिलखिला कर हँस पड़ता है।बच्चे की किलकारियाँ माँ के आनंद को दुगना कर देती हैं|

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

<u>सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न</u>

"नहला के छलके-छलके निर्मल जल से

उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके

किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को

जब घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े"

प्रश्न१:- प्रस्तुत पंक्तियों के भाव सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- माँ ने अपने बच्चे को निर्मल जल से नहलाया उसके उलझे बालों में कंघी की |माँ के स्पर्श एवं नहाने के आनंद से बच्चा प्रसन्न हो कर बड़े प्रेम से माँ को निहारता है| प्रतिदिन की एक स्वाभाविक क्रिया से कैसे माँ-बच्चे का प्रेम विकसित होता है और प्रगाढ़ होता चला जाता है इस भाव को इस रुबाई में बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत किया गया है|

प्रश्न२:- काव्यांश में आए बिंबों को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :-१**<u>"नहला के छलके-छलके निर्मल जल से"-</u>** इस प्रयोग द्वारा कवि ने बालक की निर्मलता एवं पवित्रता को जल की निर्मलता के माध्यम से अंकित किया है | छलकना शब्द जल की ताजा बूंदों का बालक के शरीर पर छलछलाने का सुंदर दृश्य बिंब प्रस्तुत करता है |

<u>२ 'घुटनियों में लेके है पिन्हाती कपड़े'</u>- इस प्रयोग में माँ की बच्चे के प्रति सावधानी ,चंचल बच्चे को चोट पहुँचाए बिना उसे कपड़े पहनाने से माँ के मातृत्व की कुशलता बिंबितहोती है |

३ **<u>"किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को"-</u>** पंक्ति में माँ –बच्चे का वात्सल्य बिंबित हुआ है | माँ से प्यार –दुलार ,स्पर्श –सुख, नहलाए जाने के आनंद को अनुभव करते हुए बच्चा माँ को प्यार भरी नजरों से देख कर उस सुख की अभिव्यक्ति कर रहा है |यह सूक्ष्म भाव अत्यंत मनोरम बन पड़ा है |संपूर्ण रुबाई में दृश्य बिंब है|

प्रश्न ३:-काव्यांश के शब्द-प्रयोग पर टिप्पणी लिखिए |

उत्तर :-गेसु –उर्दू शब्दों का प्रयोग

घुटनियों ,पिन्हाती – देशज शब्दों के माध्यम से कोमलता की अभिव्यक्ति

छलके –छलके –शब्द की पुनरावृत्ति से अभी –अभी नहलाए गए बच्चे के गीले शरीर का बिंब

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

आदि विलक्षण प्रयोग रुबाइयों को विशिष्ट बना देते हैं | हिंदी,उर्दू और लोकभाषा के अनूठे गठबंधन की झलक, जिसे गांधीजी हिंदुस्तानी के रूप में पल्लवित करना चाहते थे,देखने को मिलती है |

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

रूबाइयाँ

प्रश्न १ :-काव्य में प्रयुक्त बिंबों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर :-

- दृश्य बिंब :-बच्चे को गोद में लेना , हवा में उछालना ,स्नान कराना ,घुटनों में लेकर कपड़े पहनाना|
- श्रव्यबिंब :- बच्चे का खिलखिला कर हँस पड़ना।
- स्पर्श बिंब :-बच्चे को स्नान कराते हुए स्पर्श करना |

प्रश्न २:-"आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है ,बालक तो हई चाँद पै ललचाया है'- में बालक की कौन सी विशेषता अभिव्यक्त हुई है?

उत्तर :- इन पंक्तियों में **बालक की हठ करने की विशेषता** अभिव्यक्त हुई है। बच्चे जब जिद पर आ जाते हैं तो अपनी इच्छा पूरी करवाने के लिए **नाना प्रकार की हरकतें** किया करते हैं| ज़िदयाया शब्द **लोक भाषा का विलक्षण प्रयोग** है इसमें बच्चे का **ठुनकना , तुनकना ,पाँव पटकना, रोना आदि** सभी क्रियाएँ शामिल हैं |

प्रश्न ३ लच्छे किसे कहा गया है इनका संबंध किस त्यौहार से है?

उत्तर **:- राखी के चमकीले तारों को लच्छे** कहा गया है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से होता है|सावन **में बिजली की चमक की तरह राखी के चमकीले धागों की सुंदरता** देखते ही बनती है|

अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न

ग़ज़ल

फ़िराक गोरखपुरी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

"नौरस गुंचे पंखड़ियों की नाज़ुक गिरहें खोले हैं

या उड़ जाने को रंगो- बू गुलशन में पर तौले हैं |"

प्रश्न१:- 'नौरस' विशेषण द्वारा कवि किस अर्थ की व्यंजना करना चाहता है ?

उत्तर :नौरस अर्थात नया रस ! गुंचे अर्थात कलियों में नया –नया रस भर आया है |

प्रश्न२:- पंखड़ियों की नाज़ुक गिरहें खोलने का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर :- रस के भर जाने से कलियाँ विकसित हो रही हैं |धीरे-धीरे उनकी पंखुड़ियाँ अपनी बंद गाँठें खोल रही हैं | कवि के शब्दों में नवरस ही उनकी बंद गाँठें खोल रहा है|

प्रश्न३:- 'रंगो- बू गुलशन में पर तौले हैं' – का अर्थ स्पष्ट कीजिए|

उत्तर :-रंग और सुगंध दो पक्षी हैं जो कलियों में बंद हैं तथा उड़ जाने के लिए अपने पंख फड़फड़ा रहे हैं |यह स्थिति कलियों के फूल बन जाने से पूर्व की है जो फूल बन जाने की प्रतीक्षा में हैं |'पर तौलना' एक मुहावरा है जो उड़ान की क्षमता आँकने के लिए प्रयोग किया जाता है |

प्रश्न४:- इस शेर का भाव-सौंदर्य व्यक्त कीजिए|

उत्तर :-कलियों की नई-नई पंखुड़ियाँ खिलने लगी हैं उनमें से रस मानो टपकना ही चाहता है | वय:संधि(किशोरी)नायिका के प्रस्फुटित होते सौंदर्य का प्रतीकात्मक चित्रण अत्यंत सुंदर बन पड़ा है |

<u>सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न</u>

हम हों या किस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला
किस्मत हम को रो लेवे हैं हम किस्मत को रो ले हैं|
जो मुझको बदनाम करे हैं काश वे इतना सोच सकें
मेरा पर्दा खोले हैं या अपना पर्दा खोले हैं |

प्रश्न१:- इन शेरों की भाषा संबंधी विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर:- १. मुहावरों का प्रयोग –किस्मत का रोना –निराशा का प्रतीक

२.सरल अभिव्यक्ति ,भाषा में प्रवाहमयता है ,किस्मत और परदा शब्दों की पुनरावृत्तियाँ मोहक हैं|

३. हिंदी का घरेलू रूप

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न२:- 'मेरा परदा खोले हैं या अपना परदा खोले हैं '- की भाषिक विशेषता लिखिए |

उत्तर :-मुहावरे के प्रयोग द्वारा व्यंजनात्मक अभिव्यक्ति | परदा खोलना – भेद खोलना ,सच्चाई बयान करना|

प्रश्न३:-'हम हों या किस्मत हो हमारी ' –प्रयोग की विशेषता बताइए |

उत्तर :- हम और किस्मत दोनों शब्द एक ही व्यक्ति अर्थात फ़िराक के लिए प्रयुक्त हैं | हम और किस्मत में अभेद है यही विशेषता है |

फ़िराक गोरखपुरी

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न१:- तारे आँखें झपकावें हैं –का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए |

उत्तर:- रात्रि का सन्नाटा भी कुछ कह रहा है।इसलिए तारे पलकें झपका रहे हैं। वियोग की स्थिति में प्रकृति भी संवाद करती प्रतीत होती है |

प्रश्न२:- 'हम हों या किस्मत हो हमारी' में किस भाव की अभिव्यक्ति हुई है ?

उत्तर:- जीवन की विडंबना, किस्मत को रोना-मुहावरे के प्रयोग से, सटीक अभिव्यक्ति प्राप्त करती है। कवि जीवन से संतुष्ट नहीं है | भाग्य से शिकायत का भाव इन पंक्तियों में झलकता है |

प्रश्न३:- प्रेम के किस नियम की अभिव्यक्ति कवि ने की है ?

उत्तर :-ईश्वर की प्राप्ति सर्वस्व लुटा देने पर होती है। प्रेम के संसार का भी यही नियम है|कवि के शब्दों में ," फ़ितरत का कायम है तवाज़ुन आलमे- हुस्नो –इश्क में भी

उसको उतना ही पाते हैं खुद को जितना खो ले हैं |"

१ भाव –साम्य:- कबीर -'सीस उतारे भुई धरे तब मिलिहै करतार।'-अर्थात -स्वयं को खो कर ही प्रेम प्राप्ति की जा सकती है।

२ भाव साम्य- कबीर –जिन ढूँढा तिन पाइयाँ ,गहरे पानी पैठि|

मैं बपुरा बूडन डरा ,रहा किनारे बैठि |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न४:- शराब की महफिल में शराबी को देर रात क्या बात याद आती है?

उत्तर :- शराब की महफिल में शराबी को देर रात याद आती है कि आसमान में मनुष्य के पापों का लेखा-जोखा होता है। जैसे आधी रात के समय फरिश्ते लोगों के पापों के अध्याय खोलते हैं वैसे ही रात के समय शराब पीते हुए शायर को महबूबा की याद हो आती है मानो महबूबा फरिश्तों की तरह पाप स्थल के आस पास ही है।

प्रश्न५:- सदके फ़िराक——इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :-सदके फ़िराक——इन पंक्तियों में फ़िराक कहते हैं कि उनकी शायरी में मीर की शायरी की उत्कृष्टता ध्वनित हो रही है।

प्रश्न६:- पंखुड़ियों की नाज़ुक गिरह खोलना क्या है?

उत्तर :-पँखुड़ियों की नाज़ुक गिरह खोलना उनका धीरे -धीरे विकसित होना है।

वय:संधि(किशोरी)नायिका के प्रस्फुटित होते सौंदर्य की ओर संकेत है |

प्रश्न७:-'यों उड़ जाने को रंगो बू गुलशन में पर तौले है' भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-कलियों की सुवास उड़ने के लिए मानो पर तौल रही हो।अर्थात खुशबू का झोंका रह–रह कर उठता है।

प्रश्न८:- कवि द्वारा वर्णित रात्रि के दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर :- रात्रि का सन्नाटा भी कुछ कह रहा है।इसलिए तारे पलकें झपका रहे हैं।लगता है कि प्रकृति का कण-कण कुछ कह रहा है |

प्रश्न९:- कवि अपने वैयक्तिक अनुभव किन पँक्तियों में व्यक्त कर रहा है?

जीवन की विडंबना,-'किस्मत को रोना' मुहावरे के प्रयोग से, सटीक अभिव्यक्ति प्राप्त करती है।

"हम हों या किस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला

किस्मत हम को रो लेवे हैं हम किस्मत को रो ले हैं|"

प्रश्न१०:- शायर ने दुनिया के किस दस्तूर का वर्णन किया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :-शायर ने दुनिया के इस दस्तूर का वर्णन किया है कि लोग दूसरों को बदनाम करते हैं परंतु वे नहीं जानते कि इस तरह वे अपनी दुष्ट प्रकृति को ही उद्घाटित करते हैं।

प्रश्न११:- प्रेम की फ़ितरत कवि ने किन शब्दों में अभिव्यक्त की है?

स्वयं को खो कर ही प्रेम की प्राप्ति की जा सकती है। ईश्वर की प्राप्ति सर्वस्व लुटा देने पर होती है। प्रेम के संसार का भी यही नियम है।

प्रश्न१२:- फ़िराक गोरखपुरी किस भाषा के कवि हैंै?

उत्तर :- उर्दू भाषा ।

<u>10 छोटा मेरा खेत</u>

<u>उमाशंकर जोशी</u>

<u>(गुजराती कवि)</u>।

उमाशंकर जोशी बीसवीं सदी के गुजराती के मूर्धन्य कवि संस्कृत वाङ्मय के विद्वान हैं।उन्होंने गुजराती कविता को प्रकृति से जोड़ा।आम आदमी के जीवन की झलक उनकी रचनाओं में मिलती है।

<u>छोटा मेरा खेत</u>

<u>सार</u>

खेती के रूपक द्वारा **<u>काव्य रचना– प्रक्रिया को स्पष्ट</u>** किया गया हे।काव्य कृति की **<u>रचना बीज– वपन से लेकर पौधे के पुष्पित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती</u>** है।अंतर केवल इतना है कि **<u>कवि कर्म की फसल कालजयी,</u>** शाश्वत होती है।उसका **<u>रस-क्षरण अक्षय</u>** होता है।कागज का पन्ना, जिस पर रचना शब्दबद्ध होती है, कवि को एक चौकोर खेत की तरह लगता है। इस खेत में किसी अँधड़ (आशय भावनात्मक आँधी से होगा) के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज-रचना विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है। यह मूल रूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है। उससे शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है, जो कृषि-कर्म के लिहाज से पल्लवित -पुष्पित होने की स्थिति है। साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा फूटती है, वह क्षण में होने वाली रोपाई का ही परिणाम है पर यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई है |

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बगुलों के पंख

सार

बगुलों के पंख कविता एक चाक्षुष बिंब की कविता है। सौंदर्य का अपेक्षित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कवियों ने कई युक्तियाँ अपनाई हैं, जिसमें से सबसे प्रचलित युक्ति है-सौंदर्य के व्यौरों के चित्रात्मक वर्णन के साथ अपने मन पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का वर्णन और आत्मगत के संयोग की यह युक्ति पाठक को उस मूल सौंदर्य के काफी निकट ले जाती है। जोशी जी की इस कविता में ऐसा ही है। कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। वे कजरारे बादलों में अटका-सा रह जाता है। वह इस माया से अपने को बचाने की गुहार लगाता हैं। क्या यह सौंदर्य से बाँधने और विंधने की चरम स्थिति को व्यक्त करने का एक तरीका है।

प्रकृति का स्वतंत्र (आलंबन गत) चित्रण आधुनिक कविता की विशेषता है।चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है तो दूसरी ओर इस अप्रतिम दृश्य के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है।मंत्र मुग्ध कवि इस दृश्य के प्रभाव से आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है।विषय एवं विषयीगत सौन्दर्य के दोनों रूप कविता में उद्घाटित हुए हैं।

अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न

"छोटा मेरा खेत चौकोना

कागज़ का एक पन्ना ,कोई अंधड़ कहीं से आया

क्षण का बीज वहाँ बोया गया|

कल्पना के रसायनों को पी

बीज गल गया नि:शेष ;शब्द के अंकुर फूटे ,

पल्लव –पुष्पों से नमित हुआ विशेष |"

प्रश्न १'छोटा मेरा खेत' किसका प्रतीक है और क्यों?

उत्तर :- प्रश्न२ 'छोटा मेरा खेत' काग़ज के उस पन्ने का प्रतीक है जिस पर कवि अपनी कविता लिखता है।

प्रश्न २ कवि खेत में कौन–सा बीज बोता है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उत्तर :- कवि खेत में अपनी कल्पना का बीज बोता है?

प्रश्न ३ कवि की कल्पना से कौन से पल्लव अंकुरित होते हैं ?

उत्तर :- कवि की कल्पना से शब्द के पल्लव अंकुरित होते हैं?

प्रश्न ४ उपर्युक्त पद का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- खेती के रूपक द्वारा **काव्य-रचना–प्रक्रिया को स्पष्ट** किया गया हे।काव्य कृति की **रचना बीज– वपन से लेकर पौधे के पुष्पित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती** है।अंतर केवल इतना है कि **कवि कर्म की फसल कालजयी,** शाश्वत होती है।उसका **रस-क्षरण अक्षय** होता है।

सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न

"झूमने लगे फल,

रस अलौकिक ,

अमृत धाराएँ फूटतीं

रोपाई क्षण की ,

कटाई अनंतता की

लुटते रहने से जरा भी कम नहीं होती |

रस का अक्षय पात्र सदा का

छोटा मेरा खेत चौकोना |"

प्रश्न इस कविता की भाषा संबंधी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए –

उत्तर ;- १ प्रतीकात्मकता

२ लाक्षणिकता -

२रूपक अलंकार– रस का अक्षय पात्र सदा का

छोटा मेरा खेत चौकोना।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न २ रस अलौकिक, अमृत धाराएँ, रोपाई – कटाई-प्रतीकों के अर्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- रस अलौकिक – काव्य रस निष्पत्ति

अमृत धाराएँ- काव्यानंद

रोपाई – अनुभूति को शब्दबद्ध करना

कटाई –रसास्वादन

<u>विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर</u>

<u>कविता –</u>

<u>छोटा मेरा खेत</u>

प्रश्न १ उमाशंकर जोशी ने किस भाषा में कविताएँ लिखी हैं?

उत्तर :- गुजराती भाषा

प्रश्न२ कृषि–कर्म एवं कवि–कर्म में क्या क्या समानताएँ हैं?

उत्तर :- कृषि–कर्म एवं कवि–कर्म में निम्नलिखित समानताएँ हैं-

काव्य कृति की **<u>रचना बीज– वपन से लेकर पौधे के पुष्पित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती</u>** है।

<u>कृषि–कर्म एवं कवि–कर्म में समानताएँ</u> :-

- कागज का पन्ना, जिस पर रचना शब्दबद्ध होती है, कवि को एक चौकोर खेतलगता है।
- इस खेत में किसी अँधड़ (आशय भावनात्मक आँधी से होगा) के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है। यह बीज-रचना विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है।
- यह मूल रूप कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है और प्रक्रिया में स्वयं विगलित हो जाता है। इसीप्रकार बीज भी खाद, पानी, सूर्य की रोशनी ,हवा आदि लेकर विकसित होता है |
- काव्य –रचना से शब्दों के अंकुर निकलते हैं और अंततः कृति एक पूर्ण स्वरूप ग्रहण करती है, जो कृषि-कर्म के लिहाज से पल्लवित –पुष्पित और फलित होने की स्थिति है।

<u>अर्थ-ग्रहण-संबंधी प्रश्न</u>

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

कविता– बगुलों के पंख

नभ में पाँती- बँधे बगुलों के पंख ,

चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें |

कजरारे बादलों की छाई नभ छाया ,

हौले–हौले जाती मुझे बाँध निज माया से |

उसे कोई तनिक रोक रक्खो |

वह तो चुराए लिए जाती मेरी आँखें

नभ में पाँती- बँधी बगुलों की पाँखें |

तैरती साँझ की सतेज श्वेत काया|

प्रश्न१:- इस कविता में कवि ने किसका चित्रण किया है ?

उत्तर :- कवि ने काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्रण किया है|

प्रश्न२:- आँखें चुराने का क्या अर्थ है ?

उत्तर :- आँखें चुराने का आशय है –ध्यान पूरी तरह खींच लेना ,एकटक देखना ,मंत्रमुग्ध कर देना

प्रश्न३:-

"कजरारे बादलों की छाई नभ छाया ,

हौले –हौले जाती मुझे बाँध निज माया से |"- आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर:- काले बादलों के बीच साँझ का सुरमई वातावरण बहुत सुंदर दिखता है | ऐसा अप्रतिम सौंदर्य अपने आकर्षण में कवि को बाँध लेता है |

प्रश्न ४ "उसे कोई तनिक रोक रक्खो |'- से कवि का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर :- बगुलों की पंक्ति आकाश में दूर तक उड़ती जा रही है कवि की मंत्रमुग्ध आँखें उनका पीछा कर रही हैं | कवि उन बगुलों को रोक कर रखने की गुहार लगा रहा है कि कहीं वे उसकी आँखें ही अपने साथ न ले जाएँ |

सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न १ कविता की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए|

उत्तर :-१ चित्रात्मक भाषा

२ बोलचाल के शब्दों का प्रयोग - हौले –हौले, पाँती, कजरारे,साँझ

प्रश्न २ कविता में प्रयुक्त अलंकार चुन कर लिखिए |

उत्तर :- अनुप्रास अलंकार - बँधे बगुलों के पंख ,

मानवीकरण अलंकार - चुराए लिए जातीं वे मेरी आँखें |

प्रश्न ३ :-' निज माया' के लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- प्रकृति का अप्रतिम सौंदर्य वह माया है जो कवि को आत्मविभोर कर देती है।यह पंक्ति भी प्रशंसात्मक उक्ति है।

<u>विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न१:- 'चुराए लिए जाती वे मेरी ऑंखें' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर :-चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है तथा इस अप्रतिम दृश्य के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है। कवि के अनुसार यह दृश्य उनकी आँखें चुराए लिए जा रहा है |मंत्र मुग्ध कवि इस दृश्य के प्रभाव से आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है।

प्रश्न२:-कवि किस माया से बचने की बात कहता है?

उत्तर :- माया विश्व को अपने आकर्षण में बाँध लेने के लिए प्रसिद्ध है | कबीर ने भी 'माया महा ठगिनी हम जानी' कहकर माया की शक्ति को प्रतिपादित किया है | काले बादलों में बगुलों की सुंदरता अपना माया जाल फैला कर कवि को अपने वश में कर रही है |

Downloaded from www.studiestoday.com